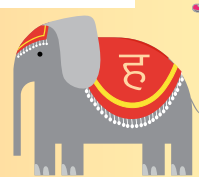


एक लड़की थी। उसका नाम
मरियम था। एक दिन वह अपनी
गली में खेल रही थी।
खेलते-खेलते एक चमकीली
पेंसिल दिखी। मरियम झट उस
पेंसिल को उठाकर घर ले गई।
घर जाते ही मरियम ने उसी
चमकीली पेंसिल से छाते का
चित्र बनाया। चित्र पूरा होते ही
उसमें से आवाज आई—
“शाकालाका बुम-बुम”।

मरियम सोचने लगी कि यह
आवाज कहाँ से आई ?
इतने में ही चित्र असली छाता
बन गया। मरियम को पता चला
कि यह जादुई पेंसिल है।



निर्देश :- बच्चों से बातचीत करें, जैसे—यदि तुमको जादुई पेंसिल मिल जाए तो
कौन-कौन से चित्र बनाना चाहोगे / चाहोगी ? यदि तुम्हारे सामने परी आ जाए तो तुम
क्या-क्या बातें करोगे / करोगी ?

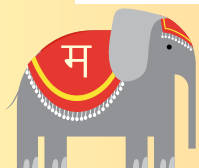
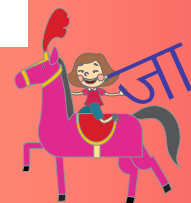


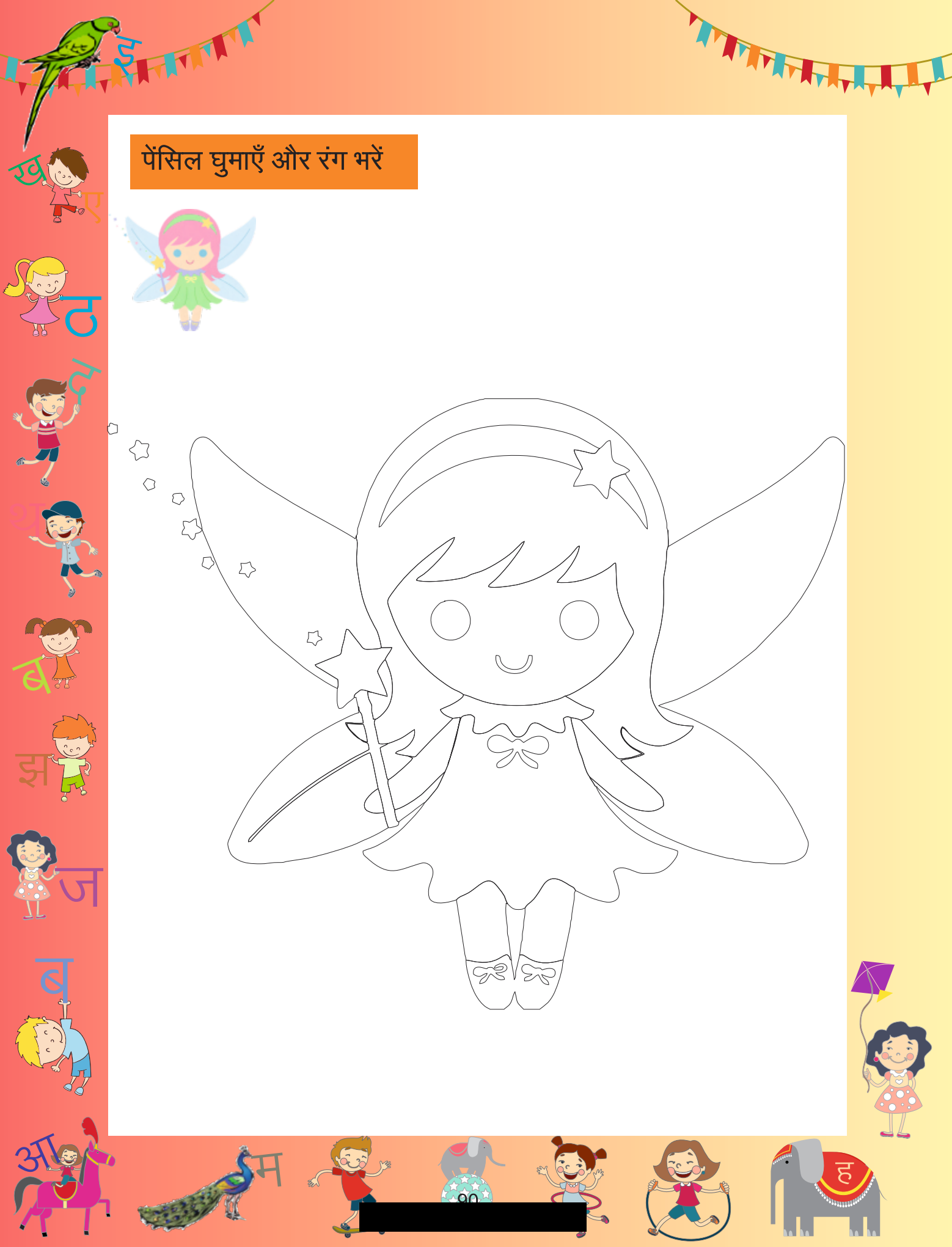
आप भी अपनी पेंसिल से यहाँ छाते का चित्र बनाएँ और रंग भरें।

क्या इस छाते में से भी “शाकालाका बुम-बुम” की आवाज आई ?
आपस में पूछें और लिखें।

“ एक दिन वह अपनी गली में खेल रही थी। ” बताइए, मरियम कौनसा
खेल खेल रही होगी ?

आप क्या-क्या खेल खेलते हो ? लिखें।





पेंसिल घुमाएँ और रंग भरें



चित्रों को उनके नाम से मिलाएँ



झोपड़ी



तोता



गिलास



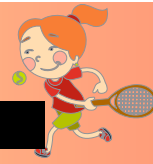
सूरज



नारियल



बादल



केवल पढ़ने के लिए

चिड़िया

फुदक—फुदक कर आती चिड़िया,
दाने चुग कर खाती चिड़िया।
कहाँ—कहाँ से चुनती तिनकें,
सुंदर नीड़ बनाती चिड़िया।
गर्मी सर्दी और वर्षा से,
बच्चों को सदा बचाती चिड़िया।
दूर—दूर से दाना लाकर,
बच्चों को खिलाती चिड़िया।
जूझ सदा झंझावातों से,
श्रम की अलख जगाती चिड़िया
नहीं कभी भी हार मानती,
रहती हरदम गाती चिड़िया।

